This question paper contains 4 printed pages]

आपका अनुक्रमांक.....

814

**B.A. (Programme)/I** **D**

HINDI DISCIPLINE—Paper I

(हिंदी अनुशासन)

(हिंदी कविता, नाटक तथा हिंदी कविता का प्रवृत्तिगत इतिहास)

(प्रवेश-वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात्—नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिये/NCWEB के विद्यार्थियों के लिये)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

**टिप्पणी** :— प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेज़ों (श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं । तथापि ये अंक NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे ।

1. किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8,8

(क) पाछे लागा जाइ था, लोक बेद के साथि ।
आगैं थैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि ॥

कबीर सतगुर नां मिल्या, रही अधूरी सीष ।
स्वांग जती का पहरि करि, धरि धरि माँगै भीष ॥

P.T.O.

(ख) अबलौं नसानी, अब न नसैहौं ।

रामकृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिर न डसैहौं ॥

पायो नाम चारुचिंतामनि, उर कर ते न खसैहौं ।

स्यामरूप सुचि रुचिर, कसौटी-चित-कंचनहि कसैहौं ॥

परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निजबस ह्वै न हँसैहौं ।

मन मधुकर पन कै तुलसी रघुपति पद-कमल बसैहौं ॥

(ग) मधुप गुनगुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,

मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो, कितनी आज घनी

इस गंभीर अनंत नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास

यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास ।

तब भी कहते हो — कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती,

तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे — यह गागर रीती ।

2. सूरदास **अथवा** नागार्जुन का साहित्यिक परिचय लिखिए । 7

3. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 6,6

(क) कबीर की साखियों के आधार पर गुरु महिमा के महत्व पर प्रकाश डालिए ।

(ख) सूरदास के वात्सल्य भाव के पदों का प्रतिपाद्य बताइए ।

(ग) 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' कविता की अंतर्वस्तु स्पष्ट कीजिए ।

(घ) 'अकाल और उसके बाद' कविता की मूल संवेदना बताइए ।

4. किसी **एक** अनुच्छेद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

मैं अपने को आश्वासन देता कि आज नहीं तो कल मैं परिस्थितियों पर वश पा लूँगा और समान रूप से दोनों क्षेत्रों में अपने को बाँट दूँगा । परन्तु मैं स्वयं ही परिस्थितियों के हाथों बनता और चालित होता रहा । जिस कल की मुझे प्रतीक्षा थी, वह कल कभी नहीं आया और मैं धीरे-धीरे खण्डित होता गया, होता गया । और एक दिन .... एक दिन मैंने पाया कि मैं सर्वथा टूट गया हूँ ।

**अथवा**

उस कटुता को केवल तुम्हीं दूर कर सकती हो, मल्लिका ! अवसर किसी की प्रतीक्षा नहीं करता । कालिदास यहाँ से नहीं जाते हैं, तो राज्य की कोई हानि नहीं होगी । राजकवि का आसन

रिक्त नहीं रहेगा । परन्तु कालिदास जो आज हैं, जीवन-भर वही रहेंगे – एक स्थानीय कवि ! जो लोग आज 'ऋतु-संहार' की प्रशंसा कर रहे हैं, वे भी कुछ दिनों में उन्हें भूल जाएँगे ।

5. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की समीक्षा कीजिए । 12

**अथवा**

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक का मुख्य पात्र आप किसे समझते हैं और क्यों ?

6. (क) आदिकाल **अथवा** सूफी काव्यधारा की विशेषताएँ बताइए ।

(ख) द्विवेदी युग **अथवा** छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए । 10,10